(अव्यक्त इशारे)
एकान्तप्रिय बनो एकता और एकाग्रता को अपनाओ

1) एकता के साथ एकान्तप्रिय बनना है। एकान्तप्रिय वह होगा जिनका अनेक तरफ से बुद्धियोग टूटा हुआ होगा और एक का ही प्रिय होगा। एक प्रिय होने कारण एक की ही याद में रह सकता। एकान्तप्रिय अर्थात् एक के सिवाय दूसरा न कोई। सर्व सम्बन्ध, सर्व रसनाएं एक से लेने वाला ही एकान्त-प्रिय हो सकता है।

2) आपस के संस्कारों में जो भिन्नता है उसे एकता में लाना है। एकता के लिए वर्तमान की भिन्नता को मिटाकर दो बातें लानी पड़ेंगी – एक - एकनामी बन सदैव हर बात में एक का ही नाम लो, साथ-साथ संकल्पों की, समय और ज्ञान खजाने की इकॉनामी करो। फिर मैं समाकर एक बाप में सभी भिन्नता समा जायेगी।

3) एकमत का वातावरण तब बनेगा जब समाने की शक्ति होगी। तो भिन्नता को समाओ तब आपस में एकता से समीप आयेंगे और सर्व के आगे दृष्टान्त रूप बनेंगे। ब्राह्मण परिवार की विशेषता है - अनेक होते भी एक। यह एकता का वायब्रेशन सारे विश्व में एक धर्म, एक राज्य की स्थापना करेगा इसलिए विशेष अटेन्शन देकर भिन्नता को मिटाकर एकता लानी है।

4) अनेक वृक्षों की डालियाँ अब एक ही चन्दन का वृक्ष हो गया। लोग कहते हैं - दो चार मातायें भी एक साथ इकट्ठी नहीं रह सकती और अभी मातायें सारे विश्व में एकता स्थापन करने के निमित्त हैं। माताओं ने ही भिन्नता में एकता लाई है। देश भिन्न है, भाषा भिन्न-भिन्न है, कल्चर भिन्न-भिन्न है लेकिन आप लोगों ने भिन्नता को एकता में लाया है।

5) जो भी राजनेतायें वा धर्मनेतायें हैं उन्हों को "पवित्रता और एकता" इसका अनुभव कराओ। इसी की कमी के कारण दोनों सत्तायें कमजोर हैं। धर्मसत्ता को धर्मसत्ता हीन बनाने का विशेष तरीका है - पवित्रता को सिद्ध करना। और राज्य सत्ता वालों के आगे एकता को सिद्ध करना।

6) "एकता और एकाग्रता"- यह दोनों श्रेष्ठ भुजायें हैं, कार्य करने के सफलता की। एकाग्रता अर्थात् सदा निरव्यर्थ संकल्प, निर्विकल्प। जहाँ एकता और एकाग्रता है वहाँ सफलता गले का हार है। वरदाता को एक शब्द प्यारा है- 'एकव्रता, एक बल एक भरोसा। साथ-साथ एकमत, न मनमत न परमत, एकरस, न और कोई व्यक्ति, न वैभव का रस। ऐसे ही एकता, एकान्तप्रिय।

7) 'अनेकता में एकता' तो प्रैक्टिकल में अनेक देश, अनेक भाषायें, अनेक रूप-रंग लेकिन अनेकता में भी सबके दिल में एकता है ना! क्योंकि दिल में एक बाप है। एक श्रीमत पर चलने वाले हो। अनेक भाषाओं में होते हुए भी मन का गीत, मन की भाषा एक है।

8) साधारण सेवायें करना ये कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन बिगड़ी को बनाना, अनेकता में एकता लाना ये है बड़ी बात। बापदादा यही कहते हैं कि पहले एकमत, एक बल, एक भरोसा और एकता - साथियों में, सेवा में, वायुमण्डल में हो।

9) जैसे नारियल तोड़कर उद्घाटन करते हो, रिबन काटकर उद्घाटन करते हो, ऐसे एकमत, एकबल, एक भरोसा और एकता की रिबन काटो और फिर सर्व के सन्तुष्टता, प्रसन्नता का नारियल तोड़ो। यह पानी धरनी में डालो फिर देखो सफलता कितनी होती है।

10) अभी सब मिलकर एक दो की हिम्मत बढ़ाके यह संकल्प करो कि अब समय को समीप लाना ही है, आत्माओं को मुक्ति दिलानी ही है। लेकिन यह तब होगा जब सोचने को स्मृति स्वरूप में लायेंगे। जहाँ एकता और दृढ़ता है वहाँ असम्भव भी सम्भव हो जाता है।

11) स्व उन्नति में, सेवा की उन्नति में एक ने कहा, दूसरे ने हाँ जी किया, ऐसे सदा एकता और दृढ़ता से बढ़ते चलो। जैसे दादियों का एकता और दृढ़ता का संगठन पक्का है, ऐसे आदि सेवा के रत्नों का संगठन पक्का हो, इसकी बहुत-बहुत आवश्यकता है।

12) संगठन की शक्ति जो चाहे वह कर सकती है। संगठन की निशानी का यादगार है पांच पाण्डव। एकता की शक्ति, हाँ जी, हाँ जी, विचार दिया, फिर एकता के बन्धन में बंध गये। यही एकता सफलता का साधन है।

13) प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने के पहले सिर्फ दो शब्द हर कर्म में लाना। एक सर्व सम्बन्ध, सम्पर्क में आपस में एकता। अनेक संस्कार होते, अनेकता में एकता और दृढ़ता यही सफलता का साधन है। कभी-कभी एकता हिल जाती है। यह करे, तो मैं करूं... नहीं। आपका स्लोगन है स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन, विश्व परिवर्तन से स्व परिवर्तन नहीं।

14) बापदादा चाहते हैं कि हर बच्चा एकरस श्रेष्ठ स्थिति के आसनधारी, एकान्तवासी, अशरीरी, एकता स्थापक, एकनामी, एकॉनामी का अवतार बने। एक दो के विचारों को समझ, सम्मान दे, एक दो को इशारा दे, लेन-देन कर आपस में संगठन की शक्ति का स्वरूप प्रत्यक्ष करे क्योंकि आपके संगठन के एकता की शक्ति सारे ब्राह्मण परिवार को संगठन में लाने के निमित्त बनेगी।

15) एकान्त एक तो स्थूल होती है, दूसरी सूक्ष्म भी होती है। एकान्त के आनन्द के अनुभवी बन जाओ तो बाह्यमुखता अच्छी नहीं लगेगी। अव्यक्त स्थिति को बढ़ाने के लिए एकान्त में रुचि रखनी है। एकता के साथ एकांतप्रिय बनना है।

16) एकान्तप्रिय वह होगा जिनका अनेक तरफ से बुद्धि योग टूटा हुआ होगा और एक का ही प्रिय होगा, एक का प्रिय होने कारण एक की याद में रह सकता है। अनेक के प्रिय होने के कारण एक की याद में रह नहीं सकता, अनेक तरफ से बुद्धियोग टूटा हुआ हो,

एक तरफ जुटा हुआ हो अर्थात् एक के सिवाय दूसरा न कोई – ऐसी स्थिति वाला जो होगा वह एकान्त प्रिय हो सकता है।

17) सर्व सम्बन्ध, सर्व रसनायें एक से लेने वाला ही एकान्त- प्रिय हो सकता है, जब एक द्वारा सर्व रसनाएं प्राप्त हो सकती हैं तो अनेक तरफ जाने की आवश्यकता ही क्या है? सिर्फ एक शब्द भी याद रखो तो उसमें सारा ज्ञान आ जाता, स्मृति भी जाती, सम्बन्ध भी आ जाता, स्थिति भी आ जाती। और साथ- साथ जो प्राप्ति होती है वह भी उस एक शब्द से स्पष्ट हो जाती। एक की याद, स्थिति एकरस और ज्ञान भी सारा एक की याद का ही मिलता है। प्राप्ति भी जो होती है वह भी एकरस रहती है।

18) जैसे कोई भी नई इन्वेन्शन अन्डरग्राउन्ड जाने से कर सकते हैं। वैसे आप भी जितना अन्डरग्राउन्ड अर्थात् अन्तर्मुखी रहेंगे उतना नई-नई इन्वेन्शन वा योजनायें निकाल सकेंगे। अन्डरग्राउन्ड रहने से एक तो वायुमण्डल से बचाव हो जायेगा, दूसरा एकान्त प्राप्त होने के कारण मनन शक्ति भी बढ़ेगी। तीसरा कोई भी माया के विघ्नों से सेफ्टी का साधन बन जाता है।

19) अपने को सदैव अन्डरग्राउन्ड अर्थात् अन्तर्मुखी बनाने की कोशिश करो। अन्डरग्राउन्ड भी सारी कारोबार चलती है वैसे अन्तर्मुखी होकर भी कार्य कर सकते हैं। अन्तर्मुखी होकरके कार्य करने से एक तो विघ्नों से बचाव, दूसरा समय का बचाव, तीसरा संकल्पों का बचाव वा बचत हो जायेगी। एकान्तवासी भी और साथ-साथ रमणीकता भी इतनी ही हो।

20) एकान्तवासी और रमणीकता! दोनों शब्दों में बहुत अन्तर है, लेकिन सम्पूर्णता में दोनों की समानता रहे, जितना ही एकान्तवासी उतना ही फिर साथ-साथ रमणीकता भी हो। एकान्त में रमणीकता गायब नहीं होनी चाहिए। दोनों समान और साथ- साथरहें। अभी-अभी एकान्तवासी, अभी - अभी रमणीक, जितनी गम्भीरता उतना ही मिलनसार भी हो। मिलनसार अर्थात् सर्व के संस्कार और स्वभाव से मिलने वाला।

21) कोई भी सिद्धि के लिए एक तो एकान्त दूसरी एकाग्रता दोनों की विधि द्वारा सिद्धि को पाते हैं। जैसे आपके यादगार चित्रों द्वारा सिद्धि प्राप्त करने वालों की विशेष दो बातों की विधि अपनाते हैं – एकान्तवासी और एकाग्रता। यही विधि आप भी साकार में अपनाओ। एकाग्रता कम होने के कारण ही दृढ़ निश्चय की कमी होती है। एकान्तवासी कम होने के कारण ही साधारण संकल्प बीज को कमजोर बना देते हैं इसलिए इस विधि द्वारा सिद्धि-स्वरूप बनो।

22) स्वयं का कल्याण करने के लिए वा स्वयं का परिवर्तन करने के लिए विशेष एकान्तवासी, अन्तर्मुखी बनो। नॉलेजफुल हो लेकिन पॉवरफुल बनो। हर बात के अनुभव में स्वयं को

सम्पन्न बनाओ। किसका बच्चा हूँ? क्या प्राप्ति है? इस पहले पाठ के अनुभवीमूर्त बनो तो सहज ही मायाजीत हो जायेंगे।

23) जैसे कोई इन्वेन्टर कोई भी इन्वेन्शन निकालने के लिए एकान्त में रहते हैं। तो यहाँ की एकान्त अर्थात् एक के अन्त में खोना है, तो बाहर की आकर्षण से एकान्त चाहिए। ऐसे नहीं सिर्फ कमरे में बैठने की एकान्त चाहिए, लेकिन मन एकान्त में हो। मन की एकाग्रता अर्थात् एक की याद में रहना, एकाग्र होना यही एकान्त है।

24) एकान्तवासी बनना अर्थात् चारों ओर के वायब्रेशन से परे चले जाना। कई ऐसे होते हैं जिन्हें एकान्त पसन्द नहीं आता, संगठन में रहना, हंसना, बोलना ज्यादा पसन्द आता, लेकिन यह हुआ बाहरमुखता में आना। अभी अपने को एकान्तवासी बनाओ अर्थात् सर्व आकर्षण के वायब्रेशन से अन्तर्मुख बनो। अब समय ऐसा आ रहा है जो यही अभ्यास काम में आयेगा। अगर बाहर की आकर्षण के वशीभूत होने का अभ्यास होगा तो समय पर धोखा दे देगा।

25) एकान्तवासी अर्थात् अनुभवी मूर्त। वर्तमान समय के प्रमाण अभी वानप्रस्थ अवस्था के समीप हो। वानप्रस्थी गुड़ियों का खेल नहीं करते हैं। वानप्रस्थी एकान्त और सुमिरण में रहते हैं। तो आप सब बेहद के वानप्रस्थी सदा एक के अन्त में अर्थात् निरन्तर एकान्त में सदा स्मृति स्वरूप रहो। यह है बेहद के वानप्रस्थी की स्थिति।

26) जितना सेवा की हलचल में आते हो उतना बिल्कुल अण्डरग्राउण्ड चले जाओ। कोई भी नई इन्वेंशन और शक्तिशाली इन्वेंशन अन्डरग्राउण्ड ही करते हैं तो एकान्तवासी बनना ही अन्डरग्राउण्ड है। जो भी समय मिले, इकट्ठा एक घण्टा वा आधा घण्टा समय नहीं मिलेगा लेकिन बीच में 5 मिनट भी मिले तो सागर के तले में चले जाओ। इससे संकल्पों पर ब्रेक लग सकेगी फिर वाणी में आना चाहेंगे तो भी नहीं आ सकेंगे।

27) एकान्तवासी अर्थात् सदा स्थूल एकान्त के साथ-साथ एक के अन्त में रहना। एकाग्रता की शक्ति से किसी भी आत्मा का मैसेज उस आत्मा तक पहुँचा सकते हो। किसी भी आत्मा का आह्वान कर सकते हो। किसी भी आत्मा की आवाज को कैच कर सकते हो। किसी भी आत्मा को दूर बैठे सहयोग दे सकते हो।

28) एकान्तवासी का डबल अर्थ है। सिर्फ बाहर की एकान्त नहीं लेकिन एक के अन्त में खो जाना, एकान्त। नहीं तो सिर्फ बाहर की एकान्त होगी तो बोर हो जायेंगे, कहेंगे- पता नहीं दिन कैसे बीतेगा! लेकिन एक बाप के अन्त में खो जाओ। जैसे सागर के तले में चले जाते हैं तो कितना खजाना मिलता है। ऐसे एक के अन्त में चले जाओ अर्थात् बाप से जो प्राप्तियाँ हुई हैं। उसमें खो जाओ।